खान तथा धातु मंत्रालय के अधीन बिजलीघर

*1293. **श्री पेंo वेंकटासुब्बया :**
श्री यशपाल सिंह :
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा :
श्री पo लाo बारूपाल :
श्री राम सहाय पाण्डेय :
श्री रवीन्द्र वर्मा :
श्री तिरुमल राव :

क्या खान तथा धातु मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उनके मंत्रालय के नियंत्रणाधीन तथा पूर्णतया उसके द्वारा वित्तपोषित बिजली घरों के नाम क्या हैं ;

(ख) क्या इन बिजलीघरों में पैदा की जाने वाली बिजली पड़ौसी राज्यों को दी जा रही है और यदि हां, तो किन-किन राज्यों को; और

(ग) यदि नहीं, तो इस के क्या कारण हैं ?

खान तथा धातु मंत्री (श्री सुo कुo डे): (क) दो इस प्रकार के विद्युत् केन्द्र राष्ट्रीय कोयला विकास निगम के अधीन तालचर और गिरिदीह में तथा एक नयवैली लिगनाइट निगम के अधीन है ।

(ख) और (ग). तालचर के पास अतिरिक्त शक्ति नहीं है तथा गिरिदीह का विद्युत् केन्द्र बंद किया जा रहा है । नयवेली विद्युत् केन्द्र से नयवेली उद्योग-समूह (काम्पलैक्स) की आवश्यकता पूरी होने पर अतिरिक्त शक्ति मद्रास ग्रिड को दी जाती है ।

दूधियों द्वारा धरना

*1294. **श्री वाल्मीकी :**
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री सo मोo बनर्जी :
श्री बड़े :
श्री वाजी :
श्री ओंकार लाल बेरवा :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उत्तर प्रदेश के कुछ दूधियों तथा 'खोया संघ' के कार्यकर्ताओं ने सरकारी रेलवे पुलिस के बुरे व्यवहार के विरोध में नई दिल्ली स्थित उनके बंगले के सामने 3 अप्रैल, 1966 से धरना दे रखा है ;

(ख) यदि हां, तो उनकी मांगें क्या हैं; और

(ग) इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई है ?

रेलवे मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डाo राम सुभग सिंह): (क) लगभग 15 आदमी जो अपने आपको उत्तर प्रदेश के दूधिया कहते थे, 3-4-1966 को रेल मंत्री के निवास-स्थान पर आये । जब उन्हें बताया गया कि मंत्री बाहर दौरे पर गये हैं तो उन्होंने मंत्री के निवास-स्थान के सामने पटरी पर धरना दे दिया । 4-4-1966 को सुबह लौटने पर जब रेल मंत्री उन से मिले और उन्होंने उन्हें यह आश्वासन दिया कि उनकी शिकायतों की जांच की जायेगी, तो वे वहां से हट गये ।

(ख) उनकी मांगें थीं, कि 2 एo टीo डीo सवारी गाड़ी को और पहले चलाया जाये, जिन गाड़ियों से वे लोग आते-जाते हैं उन्हें समय पर चलाया जाये, टूण्डला में कंट्रोलर द्वारा उनकी गाड़ी रोकने की अनुचित कार्रवाई आदि ।

(ग) 1-4-66 से 2 एo टीo डीo सवारी गाड़ी को यथासम्भव और पहले ही चलाया जा रहा है । जिन गाड़ियों से

दूधिये आते-जाते हैं, उन के समय पर चलने के बारे में पूरा ध्यान रखा जा रहा है और गाड़ियों का समय पर चलना सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक प्रयास किया जा रहा है और किया जाता रहेगा । जांच करने पर पता चला कि टूण्डला में जो कंट्रोलर ड्यूटी पर था, उसके द्वारा की गयी कार्रवाई उचित थी ।

Closure of H.M.T. Watch Factory

*1295. **Shri Linga Reddy:** Will the Minister of **Industry** be pleased to state:

(a) whether there is a proposal to close the Watch Factory of the H.M.T. at Bangalore again, on account of the shortage of foreign exchange;

(b) if so, the number of workers that would be rendered unemployed thereby; and

(c) the alternative steps proposed to be taken to absorb such employees?

The Minister of State in the Ministry of Industry (Shri Bibudhendra Misra): (a) No, Sir.

(b) and (c). Do not arise.

Structural Steel

*1296. **Shri Bhagwat Jha Azad:**
Shri M. L. Dwivedi:
Shri S. C. Samanta:
Shri Subodh Hansda:
Shrimati Savitri Nigam:
Shri P. C. Borooah:

Will the Minister of **Iron and Steel** be pleased to state:

(a) whether Government have considered the report of the National Council of Applied Economic Research which has recommended that if standards evolved by the Indian Standards Institute were implemented, there would be a big saving of structural steel; and

(b) if so, Government's reaction thereto?

The Minister of Iron and Steel (Shri T. N. Singh): (a) Yes, Sir.

(b) Some of the revised ISI standards have already been implemented; as regards the implementation of the others meetings have been arranged between the main producers of Steel and the ISI to consider and resolve certain difficulties experienced by the producers in implementing them. It is expected that decisions will be reached to overcome these difficulties at an early date.

वस्तुओं के मूल्य

*1297. **श्री म० ला० द्विवेदी:**
श्री भागवत झा आजाद:
श्री प्र० चं० बरुआ:
श्री सुबोध हंसदा:
श्री स० चं० सामन्त:

क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय उद्योगपतियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं तथा उसी किस्म की विदेशी वस्तुओं के मूल्यों में अन्तर को पूरा करने के सम्बन्ध में कोई प्रयास किये जा रहे हैं ताकि भारत में निर्मित वस्तुओं को विदेशों में प्रतियोगी मूल्यों पर बेचा जा सके ;

(ख) भारत में निर्मित वस्तुओं के अधिक मूल्य होने के मूल कारण क्या हैं जबकि विदेशों में उसी किस्म की वस्तुएं अधिक सस्ती दर पर उपलब्ध है; और

(ग) अधिक मूल्य होने के कारण भारत में निर्मित किस प्रकार की वस्तुओं की विदेशी बाजार में मांग नहीं है ?

वाणिज्य मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : (क) जी, हां ।